

संपादकीय

सुरक्षित सड़कों की जवाबदेही तय हो

मानसून की बारिश जहां किसानों के लिये राहत लेकर आती हैं, वहीं तंत्र की काहिली और भ्रष्टाचार की पोल भी खोल देती है। मानसून की शुरुआती बारिश ने एक बार फिर सार्वजनिक संरचनाओं की जानलेवा खामियों को ही उजागर किया। मुंबई में बारिश के पानी में नजर न आने वाले एक खुले मैनहोल में गिरने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। वहीं हाल ही में खुले बहुचर्चित दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे ने पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर की बदहाली उजागर कर दी। ये घटनाएं हमें बताती हैं कि बारिश के मौसम में स्थानीय निकायों की लापरवाही व खराब इंजीनियरिंग के चलते कैसे लोगों का जीवन जोखिम में पड़ जाता है। निस्संदेह, मुंबई में हुए हादसे को रोका जा सकता था। कथित साफ-सफाई के बाद लापरवाही से खुला छोड़ा गया मैनहोल तब जानलेवा बन गया, जब बारिश के पानी से ढका खुला मैनहोल नजर नहीं आया। निस्संदेह, दुर्घटना के बाद अधिकारियों को निर्लिंबित करना और ठेकेदार को काली सूची में डालना, फौरी तौर पर सही कदम है, लेकिन सवाल यह है कि हादसे होने के बाद ही ऐसे कदम क्यों उठाये जाते हैं? पहले से ही नागरिकों की सुरक्षा के लिये चाक-चौबंद व्यवस्था क्यों नहीं होती? कायदे से किसी सड़क पर मैनहोल खोलने से पहले बैरिकेड्स लगाने, चेतावनी देने वाले संकेत और अस्थायी कवर से ढकना बुनियादी सुरक्षा उपाय हैं। जिन्हें अनिवार्य रूप से सुनिश्चित किया जाना चाहिए। बीते साल भी दिल्ली में भारी बारिश के दौरान स्कूटर फिसलने से एक महिला और उसका तीन साल का बेटा पानी से भरे नाले में बह गये थे। ये असुरक्षित ड्रेजिंग संरचना की घातकता को ही दर्शाता है। विडंबना है कि हमारा तंत्र सालभर सोया रहता है और जब बरसात शुरू होने को होती है, तब परम्परा- नालों की सफाई के काम की औपचारिकता पूरी करता है। निस्संदेह, संशोधित विभागों के अधिकारियों की सर्वकालिक जवाबदेही तय की जानी चाहिए। फिर किसी भी तरह की लापरवाही होने पर सख्त दंडात्मक कार्रवाई भी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

वहीं दूसरी ओर दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे के धंसने की घटना भी एक चिंताजनक स्थिति को दर्शाती है। यह निर्विवाद सत्य है कि कोई सड़क बारिश आने के कारण रातों-रात नहीं धंसती है। इसमें सड़क निर्माण के दौरान सतर्कता की अनदेखी भी शामिल है। दरअसल, सड़क निर्माण के दौरान जल निकासी की कारगर व्यवस्था न होने, मिट्टी की स्थिरता सुनिश्चित न करने और निर्माण में गुणवत्ता की कमी से ही बरसाली पानी सड़क की सतह के नीचे मिट्टी को धीरे-धीरे काटने लगता है। कालांतर यह मिट्टी का कटाव ही सड़क धंसने की वजह बन जाता है। साल 2024 में बिहार में पुलों के ढहने की शृंखला ने भी निर्माण कार्य में घटिया सामग्री के उपयोग की हकीकत बतायी थी। इसी तरह की चिंताएं अकसर सामने आती हैं जब आधुनिक कहे जाने वाले महानगरों बैंगलूर और मुंबई में हर मानसून में सड़कों में बने गूढ़ दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं। इतना ही नहीं इससे आयात में भी अराजकता व व्यवधान पैदा होता है। बहरहाल, इन सभी घटनाओं के मूल में एक बात तो समान है कि स्थानीय निकाय व प्रशासन जोखिमों का समय रहते अनुमान नहीं लगा पाते हैं। यह तथ्य सभी अधिकारी जानते हैं कि एक निश्चित समय पर मानसून आता है। बाकायदा समय-समय पर सूचना माध्यमों में मौसम विभाग द्वारा मानसून की भविष्यवाणी की जाती है। लेकिन अधिकारी तब जागते हैं जब स्थितियां जटिल हो जाती हैं। वे इन हालातों को अप्रत्याशित आपात स्थिति के रूप में दर्शाने का प्रयास करते हैं। दरअसल, कई स्तरों पर होने वाली कमीशनखोरी व राजनीतिक हस्तक्षेप के चलते अकसर ठेकेदारों की जवाबदेही तय नहीं की जाती है। विडंबना यह भी है कि निरीक्षण भी अक्सर खानापूति जैसा ही होता है। वहीं दूसरी ओर सार्वजनिक संरचना का रखरखाव भी निवारक के बजाय प्रतिक्रियात्मक ही रहता है। वास्तव में कारगर समाधान के लिये जरूरी है कि मानसून से पहले सुरक्षा उपायों को संस्थागत ढंग से संयोजित किया जाए, इंजीनियरिंग मानकों को सख्ती से लागू किया जाए, गुणवत्ता की स्वतंत्र जांच हो और ठेकेदार को कानूनी रूप से जवाबदेह बनाया जाए। दुर्घटना होने के बाद प्रतिक्रिया देने के बजाय यह सुनिश्चित हो कि ऐसी घटनाएं हो ही न पाएं।

अभियान

मां लक्ष्मी को ‘चंचला’ क्यों कहा जाता है? धन, समृद्धि और स्थायी लक्ष्मी कृपा का गूढ़ रहस्य

सनातन धर्म में मां लक्ष्मी केवल धन की देवी नहीं हैं, बल्कि वे समृद्धि, सौभाग्य, ऐश्वर्य, अन्न, धान्य, सौंदर्य, सौम्यता, शुभता और जीवन में संतुलित उन्नति की अधिष्ठात्री शक्ति मानी जाती हैं। जिस घर, परिवार, समाज और राष्ट्र पर मां लक्ष्मी की कृपा होती है, वहां केवल धन ही नहीं, बल्कि सुख, शांति, सम्मान, सद्बुद्धि और समृद्धि भी निवास करती हैं। यही कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में मां लक्ष्मी का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहता है। दीपावली से लेकर प्रत्येक शुक्रवार तक मां लक्ष्मी की विशेष पूजा की जाती है और उनसे घर में स्थायी निवास की प्रार्थना की जाती है। किंतु एक रोचक प्रश्न सदियों से लोगों के मन में उठता रहा है कि जब मां लक्ष्मी समृद्धि की देवी हैं, तब उन्हें ‘चंचला’ क्यों कहा जाता है? क्या इसका अर्थ यह है कि मां लक्ष्मी किसी के पास पीछे कभी समय तक नहीं रहतीं, या फिर इसके पीछे कोई गहरा आध्यात्मिक और दार्शनिक रहस्य छिपा हुआ है? शास्त्रों, पुराणों और वैदिक परंपराओं का अध्ययन करने पर इसका अर्थपूर्ण गहन उत्तर प्राप्त होता है।

भारतीय संस्कृत भाषा में ‘चंचला’ शब्द का अर्थ है—जो एक स्थान पर स्थिर न रहे, जो निरंतर गतिशील हो, जो परिवर्तनशील हो, जो मानव का मन एक क्षण में अनेक विचारों के बीच घूमता रहता है, उसी प्रकार धन और वैभव भी स्थायी नहीं रहते। यही कारण है कि मां लक्ष्मी का एक नाम चंचला रखा गया। इसका अर्थ यह नहीं है कि

देवी अस्थिर स्वभाव की हैं, बल्कि यह संसार को यह समझाना का दिव्य संदेश है कि भौतिक संपत्ति सदैव परिवर्तनशील होती है। यदि धन का सदुपयोग न किया जाए, यदि व्यक्ति अहंकार में डूब जाए, यदि धर्म और सत्त्वचार का त्याग कर दे, तो लक्ष्मी धीरे-धीरे उस स्थान से विदा हो जाती है। इसके विपरीत जहां परिश्रम, ईमानदारी, संयम और सेवा का वातावरण होता है, वहां मां लक्ष्मी पुनः अपनी कृपा बरसाती हैं। भारतीय दर्शन में धन को कभी भी अंतिम लक्ष्य नहीं माना गया। धन को जीवन का साधन कहा गया है, साध्य नहीं। इसलिए शास्त्र बताते हैं कि धन का प्रवाह नदी के समान होना चाहिए। यदि नदी बहती रहती है तो निर्मल रहती है, लेकिन धन का प्रवाह रुक जाए तो उसमें गंदगी और दुग्ध उत्पन्न होने लगती हैं। ठीक उसी प्रकार धन का उपयोग धर्म, दान, सेवा, परिवार, शिक्षा और समाज के कल्याण में होना चाहिए। जो व्यक्ति केवल संप्रदा करता है और समाज के प्रति अपने दायित्वों को भूल जाता है, वहां लक्ष्मी का स्थायी निवास नहीं माना जाता। यही चंचलता का वास्तविक अर्थ है।

धार्मिक ग्रंथों में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि जिस घर में स्वच्छता, अनुशासन, सत्य, श्रम, सद्भाव, अतिथि सत्कार, मात-पिता का सम्मान और ईश्वर के प्रति श्रद्धा होती है, वहां मां लक्ष्मी प्रसन्न होकर निवास करती हैं। इसके विपरीत जहां आलस्य, अस्वच्छता, क्रोध, अहंकार,

छल-कपट, अपमान, नशा, अन्याय और पारिवारिक कलह का वातावरण होता है, वहां लक्ष्मी अंधिच सदा ही रहती हैं। इसलिए कहा जाता है कि लक्ष्मी धन के साथ-साथ चरित्र को भी देखती हैं। यदि चरित्र कमजोर हो जाए तो धन भी धीरे-धीरे साथ छोड़ देता है। पुराणों में वर्णित समृद्ध संघन की कथा भी मां लक्ष्मी की चंचलता के गहरे रहस्य को समझाती है। जब देवताओं और दैत्यों ने अप्सुत प्राप्त करने के लिए क्षीरसागर का स्नान किया, तब चौदह दिव्य रत्न प्रकट हुए। उन्हीं रत्नों में से एक थीं देवी लक्ष्मी। उनके प्रकट होते ही समस्त देवताओं और असुरों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने वे सौभाग्य और समृद्धि की प्रतीक थीं। लेकिन मां लक्ष्मी ने सभी में से भगवान श्रीहरि विष्णु को अपने पति के रूप में चुना। यह चयन धन के वैवाहिक घटना नहीं था, बल्कि एक गहन केषात्मिक संदेश था। भगवान विष्णु सृष्टि के पालनकर्ता हैं। वे संतुलन, मर्यादा, धर्म और व्यवस्था के प्रतीक हैं। इसलिए लक्ष्मी ने उसी शक्ति को चुना जो संसार में संतुलन बनाए रखती है। इसका अर्थ यह है कि जहां संतुलन होगा, वहीं लक्ष्मी का स्थायी निवास होगा। यही कारण है कि हिंदू धर्म में लक्ष्मी और विष्णु की पूजा साथ-साथ की जाती है। यदि केवल धन हो लेकिन धर्म न हो, तो वह धन विनाश का कारण बन सकता है। यदि केवल वैभव हो लेकिन विवेक न हो, तो वह अहंकार को जन्म

देता है। इसलिए मां लक्ष्मी सदैव भगवान विष्णु के साथ विराजमान रहना चाहती हैं, जिससे यह संतुलित शक्ति के धन का संचालन धर्म और विवेक के साथ होना चाहिए। शास्त्रों में लक्ष्मी के अनेक स्वरूपों का वर्णन मिलता है। अष्टलक्ष्मी के रूप में वे धन, अन्न, विद्या, साहस, संतान, विजय, धैर्य और आध्यात्मिक समृद्धि प्रदान करती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वास्तविक समृद्धि केवल बैंक बैलेंस करने के लिए क्षीरसागर का स्नान किया, तब चौदह दिव्य रत्न प्रकट हुए। उन्हीं रत्नों में से एक थीं देवी लक्ष्मी। उनके प्रकट होते ही समस्त देवताओं और असुरों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने वे सौभाग्य और समृद्धि की प्रतीक थीं। लेकिन मां लक्ष्मी ने सभी में से भगवान श्रीहरि विष्णु को अपने पति के रूप में चुना। यह चयन धन के वैवाहिक घटना नहीं था, बल्कि एक गहन केषात्मिक संदेश था। भगवान विष्णु सृष्टि के पालनकर्ता हैं। वे संतुलन, मर्यादा, धर्म और व्यवस्था के प्रतीक हैं। इसलिए लक्ष्मी ने उसी शक्ति को चुना जो संसार में संतुलन बनाए रखती है। इसका अर्थ यह है कि जहां संतुलन होगा, वहीं लक्ष्मी का स्थायी निवास होगा। यही कारण है कि हिंदू धर्म में लक्ष्मी और विष्णु की पूजा साथ-साथ की जाती है। यदि केवल धन हो लेकिन धर्म न हो, तो वह धन विनाश का कारण बन सकता है। यदि केवल वैभव हो लेकिन विवेक न हो, तो वह अहंकार को जन्म

दान्यता रही है कि जहां गंदगी होती है, वहां नकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है और समृद्धि घटने लगती है। यही कारण है कि दीपावली से पहले घरों की विशेष सफाई की जाती है। इसका उद्देश्य केवल बाहरी स्वच्छता नहीं, बल्कि मन, विचार और व्यवहार की भी शुद्धि करना है। यदि मन में ईर्ष्य, द्वेष और अहंकार भरा हो, तो बाहरी वैभव भी स्थायी सुख नहीं दे सकता। दान-पुण्य को भी लक्ष्मी प्राप्त का महत्वपूर्ण मध्यम बताया गया है। शास्त्र कहते हैं कि धन जिता न सके उपयोग में लाया जाएगा, उतना ही शुभ फल देगा। गौसेवा, अन्नदान, वस्त्रदान, शिक्षा सहायता, गैरिगों की सेवा और जरूरतमंदों की सहायता को लक्ष्मी की कृपा बढ़ाने वाला माना गया है। जो व्यक्ति केवल स्वयं के लिए धन संघय करता है, उसका वैभव सीमित हो जाता है, जबकि जो समाज के हित में धन का उपयोग करता है, उसकी समृद्धि कई गुना बढ़ती है। भारतीय परंपरा में अनेक ऐसे सरल उपाय बताए गए हैं जिन्हें श्रद्धा और नियमितता के साथ करने पर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। प्रतिदिन घर की पहली रोटी गाय को और अंतिम रोटी कुत्ते को खिलाने की परंपरा केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं है, बल्कि जीवों के प्रति करुण और सेवा की भावना विकसित करने का माध्यम है। गौ को सनातन संस्कृति में समृद्धि और पोषण का प्रतीक माना गया है, जबकि कुत्ते को भोजन

देना दया और संरक्षण की भावना का प्रतीक है। ऐसी मान्यता है कि इससे जीवन में शुभता और सौभाग्य का संचार होता है। प्रत्येक शुक्रवार को श्रद्धापूर्वक श्रीसूक्त अथवा लक्ष्मी सूक्त का पाठ करना भी अत्यंत शुभ माना गया है। वैदिक मंत्रों की ध्वनि वातावरण को धन्यता के स्वीकार किया और न ही अवसरों की कमी को अपनी हार बनने दिया। उन्होंने स्वयं अक्सर बनाए और अपनी मेहनत से उन्हें सफलता में बदल दिया। यही कारण है कि उनका जीवन आज भी विश्वभर के विद्यार्थियों, वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

देना दया और संरक्षण की भावना का प्रतीक है। ऐसी मान्यता है कि इससे जीवन में शुभता और सौभाग्य का संचार होता है। प्रत्येक शुक्रवार को श्रद्धापूर्वक श्रीसूक्त अथवा लक्ष्मी सूक्त का पाठ करना भी अत्यंत शुभ माना गया है। वैदिक मंत्रों की ध्वनि वातावरण को धन्यता के स्वीकार किया और न ही अवसरों की कमी को अपनी हार बनने दिया। उन्होंने स्वयं अक्सर बनाए और अपनी मेहनत से उन्हें सफलता में बदल दिया। यही कारण है कि उनका जीवन आज भी विश्वभर के विद्यार्थियों, वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

देना दया और संरक्षण की भावना का प्रतीक है। ऐसी मान्यता है कि इससे जीवन में शुभता और सौभाग्य का संचार होता है। प्रत्येक शुक्रवार को श्रद्धापूर्वक श्रीसूक्त अथवा लक्ष्मी सूक्त का पाठ करना भी अत्यंत शुभ माना गया है। वैदिक मंत्रों की ध्वनि वातावरण को धन्यता के स्वीकार किया और न ही अवसरों की कमी को अपनी हार बनने दिया। उन्होंने स्वयं अक्सर बनाए और अपनी मेहनत से उन्हें सफलता में बदल दिया। यही कारण है कि उनका जीवन आज भी विश्वभर के विद्यार्थियों, वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

साणंद की सेमीकंडक्टर क्षेत्र में हैट्रिक : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 7600 करोड़ रुपए के अत्याधुनिक सीजी सेमीकॉन के ओएसएटी प्लांट का शुभारंभ किया

►► **भारत की सेमीकंडक्टर यात्रा के लिए यह एक ऐतिहासिक दिवस है, साणंद में सीजी सेमी ओएसएटी सुविधा चिप उत्पादन इकोसिस्टम को मजबूत करेगी, तकनीकी आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन देगी और वैश्विक सेमीकंडक्टर वैल्यू चेन में भारत का स्थान मजबूत करेगी : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

►► सेमीकॉन इंडिया प्रोग्राम तेज गति पकड़ रहा है, स्टेप बाय स्टेप, ब्रिक बाय ब्रिक और अब चिप बाय चिप

►► भारत में सेमीकंडक्टर उद्योग का विस्तार रातोंरात नहीं हुआ, यह इलेक्ट्रॉनिक्स क्रांति का अगला कदम है, जो पिछले एक दशक में भारत में हुई है

►► पहले प्रोडक्ट्स, फिर कंपोनेंट्स और अब सेमीकंडक्टर्स, भारत समग्र इलेक्ट्रॉनिक्स वैल्यू चेन का निर्माण कर रहा है, यह विकसित भारत का रोडमैप है, यह मैक इन इंडिया का अगला चरण है

►► हमारा लक्ष्य चिप डिजाइन से लेकर फैब्रिकेशन और पैकेजिंग तक, भारत में संपूर्ण सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम बनाता है

►► भारत के युवा मेड इन इंडिया चिप्स के साथ एआई, रोबोटिक्स और नेक्स्ट-जेन टेक क्रांति को ऊर्जा देंगे

►► **वैश्विक सेमीकंडक्टर मैप पर चमकेगा गुजरात : प्रतिदिन 1.5 करोड़ चिप्स की क्षमता के साथ अगले 5 वर्षों में 5000 से अधिक रोजगार के अवसरों का सृजन होगा**

►► **प्रधानमंत्री ने प्रथम चिप शिपमेंट ग्लोबल जायंट रेनेसास को सौंपा**

►► **प्रधानमंत्री के विजनरी नेतृत्व में यह दशक भारत के लिए सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर्स का ‘टेकेड’ : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल**

►► **हमारी सेमीकंडक्टर चिप्स न केवल भारत में इस्तेमाल होगी, बल्कि जापान, अमेरिका और यूरोप में भी उसका निर्यात होगा : श्री अश्विनी वैष्णव**

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को गुजरात के साणंद में सीजी सेमी आउटसोर्सिंग सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्ट (ओएसएटी) फैसिलिटी का उद्घाटन किया। इस अवसर के महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्रधानमंत्री ने इस लॉन्चिंग को देश के अपने लक्ष्यों के प्रति अटूट संकल्प का प्रमाण बताया। उन्होंने जोर देकर कहा कि देश बिना किसी झिझक के अपने मजबूत संकल्पों को वास्तविकता में रूपांतरित करता है। श्री मोदी ने दृढ़ता से कहा, “आज का यह कार्यक्रम इस बात का प्रमाण है कि भारत जो जान लेता है, वो करके दिखाता है।”

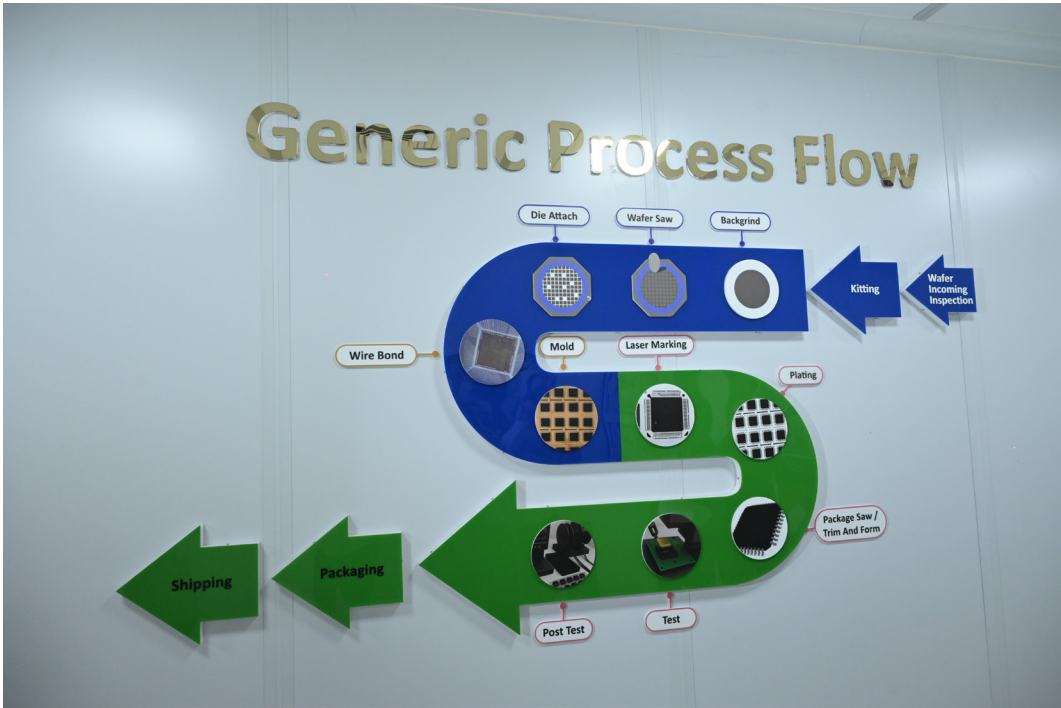
आधे दशक पहले शुरू किए गए रणनीतिक विजन को याद करते हुए प्रधानमंत्री ने देश को अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी के लिए वैश्विक हब में बदलने के मुख्य उद्देश्य का उल्लेख किया। स्थानीय डिजाइन और स्थानीय उत्पादन की व्यापक रणनीतियों से प्रेरित होकर उन्होंने इस तीसरी बड़ी फैसिलिटी में व्यावसायिक चिप पैकेजिंग की आधिकारिक शुरुआत का जश्न मनाया। श्री मोदी ने कहा, “हम ‘डिजाइन इन इंडिया’ और ‘मैक इन इंडिया’ के मूल मंत्र के साथ सफलतापूर्वक आगे बढ़े हैं।” इस प्रोजेक्ट के तेज विकास की समर्थरेखा का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने वर्ष 2024 में इसके शिलान्यास अवसर को याद किया और अगस्त 2025 तक चिप टेस्टिंग की तेज शुरुआत की प्रशंसा की। उन्होंने योजना से लेकर बड़े पैमाने पर उत्पादन तक के इस तेज सफर का श्रेय प्रोजेक्ट से जुड़े अनेक सहयोगियों के निरंतर समर्पण और ध्यान को दिया। श्री मोदी ने आगे कहा, “शिलान्यास से लेकर उत्पादन तक का यह असाधारण सफर निश्चित रूप से अनेक साधियों की कड़ी

मेहनत का परिणाम है।” सभा को संबोधित करने से पहले अपनी व्यक्तिगत मुलाकातों को याद करते हुए प्रधानमंत्री ने फैसिलिटी में तैनात समर्पित कर्मचारियों के साथ बातचीत के अपने अनुभव साझा किए। एनजीबिशन के दौर के दौरान अनेक युवा पेशेवरों के साथ सीधा संवाद करने के बाद, उन्होंने उनकी अद्भुत ऊर्जा, आशावाद और सकारात्मक दृष्टिकोण की प्रशंसा की। श्री मोदी ने कहा, “आज मैंने जितने भी युवा साथियों से बातचीत की, वे सभी पूरी तरह से ‘आज का यह कार्यक्रम इस बात का प्रमाण है कि भारत जो जान लेता है, वो करके दिखाता है।’”

गंत सवा दो वर्ष में हासिल किए गए बड़े इंडिया’ और ‘मैक इन इंडिया’ के मूल मंत्र के साथ सफलतापूर्वक आगे बढ़े हैं।” इस प्रोजेक्ट के तेज विकास की समर्थरेखा का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने वर्ष 2024 में इसके शिलान्यास अवसर को याद किया और अगस्त 2025 तक चिप टेस्टिंग की तेज शुरुआत की प्रशंसा की। उन्होंने योजना से लेकर बड़े पैमाने पर उत्पादन तक के इस तेज सफर का श्रेय प्रोजेक्ट से जुड़े अनेक सहयोगियों के निरंतर समर्पण और ध्यान को दिया। श्री मोदी ने आगे कहा, “शिलान्यास से लेकर उत्पादन तक का यह असाधारण सफर निश्चित रूप से अनेक साधियों की कड़ी

मेहनत का परिणाम है।” सभा को संबोधित करने से पहले अपनी व्यक्तिगत मुलाकातों को याद करते हुए प्रधानमंत्री ने फैसिलिटी में तैनात समर्पित कर्मचारियों के साथ बातचीत के अपने अनुभव साझा किए। एनजीबिशन के दौर के दौरान अनेक युवा पेशेवरों के साथ सीधा संवाद करने के बाद, उन्होंने उनकी अद्भुत ऊर्जा, आशावाद और सकारात्मक दृष्टिकोण की प्रशंसा की। श्री मोदी ने कहा, “आज मैंने जितने भी युवा साथियों से बातचीत की, वे सभी पूरी तरह से ‘आज का यह कार्यक्रम इस बात का प्रमाण है कि भारत जो जान लेता है, वो करके दिखाता है।’”

गंत सवा दो वर्ष में हासिल किए गए बड़े इंडिया’ और ‘मैक इन इंडिया’ के मूल मंत्र के साथ सफलतापूर्वक आगे बढ़े हैं।” इस प्रोजेक्ट के तेज विकास की समर्थरेखा का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने वर्ष 2024 में इसके शिलान्यास अवसर को याद किया और अगस्त 2025 तक चिप टेस्टिंग की तेज शुरुआत की प्रशंसा की। उन्होंने योजना से लेकर बड़े पैमाने पर उत्पादन तक के इस तेज सफर का श्रेय प्रोजेक्ट से जुड़े अनेक सहयोगियों के निरंतर समर्पण और ध्यान को दिया। श्री मोदी ने आगे कहा, “शिलान्यास से लेकर उत्पादन तक का यह असाधारण सफर निश्चित रूप से अनेक साधियों की कड़ी



इकोसिस्टम के भविष्य के चरणों का मैप प्रस्तुत करते हुए प्रधानमंत्री ने पूरी सप्लाई चेन को सुरक्षित रखने के लिए हाई-टेक मटेरियल्स और क्रिटिकल मिनरल्स में आत्मनिर्भरता की खासी जरूरत पर बल दिया। उन्होंने डिजाइन से लेकर पैकेजिंग तक फैले स्थानीय नेटवर्क की कल्पना करते हुए एआई और रोबोटिक्स में अत्याधुनिक क्रांति के लिए इन लोकल चिप्स का उपयोग करने के लिए युवा पीढ़ी पर अपार विश्वास व्यक्त किया। श्री मोदी ने जोर देकर कहा, “हमारे युवा वृद्धि के आंकड़े साझा किए। उन्होंने सरकारी कर्णनैतिक रोडमैप के बारे में बताते हुए प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि हमारा प्रयास, केवल फाइनल प्रोडक्ट में आत्मनिर्भरता तक सीमित नहीं है। हमारा प्रयास कंपोनेंट्स में भी आत्मनिर्भरता की तरफ है। वैश्विक टेक्नोलॉजी को ताकत देने वाली चिप्स का उत्पादन करने की प्रतिबद्धता के साथ उन्होंने संपूर्ण एंड-टू-एंड स्थानीय वैल्यू चेन की रूपरेखा दी। श्री मोदी ने कहा, “पहले प्रोडक्ट, फिर कंपोनेंट्स और अब सेमीकंडक्टर, यह मैक इन इंडिया का निर्णायक अगला चरण है।”

खोले गए विशाल नए आयामों की ओर इशारा करते हुए उन्होंने युवा पीढ़ी से इन उभरते अवसरों को अत्यंत उत्साह के साथ भुनाने का अनुरोध किया। श्री मोदी ने दृढ़तापूर्वक कहा, “भारत के युवाओं को कुछ नया सीखने और उसे लागू करने का यह अद्भुत अवसर विल्कुल भी नहीं छोड़ना चाहिए।” इस तकनीकी प्रगति के सामाजिक प्रभावों को दर्शाते हुए प्रधानमंत्री ने इस नई फैसिलिटी में इकोसिस्टम से काम कर रही आदिवासी समुदाय की युवतियों की प्रेरणादायी बातें साझा की। साधारण पृष्ठभूमि और आईटीआई की पढ़ाई से लेकर मलेशिया में अत्याधुनिक तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त करने तक की उनकी यात्रा से वे गहराई से प्रभावित हुए और उनकी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि इन बेटियों ने पहले कभी अपने गृह राज्य से बाहर की यात्रा नहीं की थी, इसके बावजूद दुनिया की सबसे आधुनिक उत्पादन प्रक्रियाओं को चलाने में अहम भूमिका निभाई है। श्री मोदी ने कहा, “वास्तव में, असाधारण सपने देखने वाली ये बेटियां आज ‘मेड इन इंडिया’ चिप उत्पादन प्रक्रिया का एक अभिन्न हिस्सा हैं।” अपने संबोधन के समापन में प्रधानमंत्री ने दोहराया कि देश संपूर्ण विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में तेज गति से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने अनेक मैनुफैक्चरिंग प्लांट्स के समय पर साकार हो जाने की कुछ महीने पहले कही गई अपनी बात के पूरा होने पर खुशी व्यक्त की। वैश्विक निवेशकों

को संपूर्ण नीतिगत स्थिरता, स्पष्ट निर्णय लेने की क्षमता और शानदार क्रियान्वयन गति का आश्वासन दिया और सुनियोजित आर्थिक सुधारों की तेज गति का वादा किया। श्री मोदी ने कहा, “ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के प्रति पूरी प्रतिबद्धता के साथ, 140 करोड़ भारतीय 2047 तक देश को निश्चित रूप से विकसित बनाएंगे।”

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सीजी सेमीकॉन के कमर्शियल प्रोडक्शन प्रारंभ होने के अवसर को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की आत्मनिर्भर भारत के के लिए प्रतिबद्धता का एक और उदाहरण बताया। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि यह प्लांट भारत को ग्लोबल सप्लाई चेन से एकीकृत करेगा और उदाहरण बताया। देश के सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम को और अधिक वेग देगा। उन्होंने यह भी कहा कि सीजी सेमीकॉन के इस प्लांट के माध्यम से 5 हजार से अधिक प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रोजगार का सृजन होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के लगातार 12 वर्ष के सुशासन कार्यकाल के दौरान भारत ने फ्रेजाइल फाइव इकोनॉमी से निकलकर फास्टस्ट ग्रोइंग इकोनॉमी की विशिष्ट पहचान प्राप्त की है। श्री पटेल ने आर्थिक विकास की इस यात्रा में मैनुफैक्चरिंग, सॉफ्ट पावर तथा टेक्नोलॉजी लैंडस्केप में अनेक नए क्षेत्रों के द्वार खुलने पर बल व्यक्त किया। उन्होंने जोड़ा कि सेमीकंडक्टर एवं इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर्स में प्रधानमंत्री

के विजन से भारत का प्रभाव बढ़ा है। कोरोना महामारी के दौरान जब पूरी ग्लोबल चेन संकट में थी, तब प्रधानमंत्री ने भारत को सेमीकंडक्टर क्षेत्र में ग्लोबल हब बनाने का जो संकल्प किया था, उसे आज “जो कहना, वह करना” के मंत्र के साथ साकार किया है।

उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री के विजन से देश की प्रथम स्मार्ट इंडस्ट्रियल सिटी धोलेरा में विश्वस्तरीय सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम विकसित हो रहा है। इतना ही नहीं, सेमीकंडक्टर क्षेत्र में गुजरात को प्यूवर रेडी बनाने के उद्देश्य से वर्ष 2022 में देश की पहली सेमीकंडक्टर पॉलिसी घोषित करने का गौरव भी गुजरात ने प्राप्त किया है।

मुख्यमंत्री ने वर्ष 2047 तक विकसित भारत के निर्माण के प्रधानमंत्री के संकल्प को साकार करने में आत्मनिर्भरता को मुख्य आधार बताते हुए कहा कि श्री नरेन्द्रभाई मोदी के नेतृत्व मंत्र आत्मनिर्भरता अब ग्लोबल चैलेंजर्स का सॉल्यूशन बन गई है। उन्होंने विकसित गुजरात से विकसित भारत के निर्माण में सहयोग करने के लिए सभी का आह्वान भी किया।

फैसिलिटी से हमारा प्रथम कमर्शियल कन्साइनमेंट जापान की रेनेसास कंपनी के वैश्विक ग्राहकों के लिए रवाना किया गया है, जो वैश्विक स्तर पर हमारी गुणवत्ता एवं क्षमता को सिद्ध करता है। “काम बोलता है” और “एकता में ही शक्ति है” के मंत्र को सार्थक करते हुए यह प्रोजेक्ट केवल एक फैक्टरी का निर्माण नहीं है, बल्कि वैश्विक सप्लाई चेन में भारत को स्थापित करने तथा देश के एडवांस मैनुफैक्चरिंग कौशल को नई ऊंचाइयों तक ले जाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है, क्योंकि भारत की उड़ान में ही हमारी उड़ान है। श्री सुब्बैया ने गुजराती कहावतों का उल्लेख कर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया।

उल्लेखनीय है कि 7,600 करोड़ रुपए के निवेश से प्रारंभ हुआ यह प्रोजेक्ट देश और दुनिया के सेमीकंडक्टर क्षेत्र में भारत की आत्मनिर्भरता का नया अध्याय लिखेगा। भारत सरकार के महत्वाकांक्षी ‘इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन’ अंतर्गत गुजरात के औद्योगिक हब साणंद में उद्घाटित यह प्लांट एक और ऐतिहासिक उपलब्धि सिद्ध होगा।

प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर सेमीकंडक्टर ओएसएटी प्लांट के क्लीन रूम तथा एक्सपीरियेंस सेंटर का दौरा किया और इंजीनियरों के साथ संवाद किया। प्रधानमंत्री के करकमलों से पहली चिप शिपमेंट ग्लोबल जायंट रेनेसास को सौंपी गई। इस समारोह में गुजरात के उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुनभाई मोहवाडिया, राज्य मंत्रिमंडल के सदस्य, प्रदेश अध्यक्ष श्री जगदीशभाई विश्वकर्मा, सांसद श्री दिनेशभाई मकणगा, स्थानीय विधायक, राज्य के मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, राजस्व विभाग की अपर मुख्य सचिव श्री जयंती रवि, वरिष्ठ अधिकारी, रेनेसास इलेक्ट्रॉनिक्स की प्रेसिडेंट श्री मालिनी नारायणमूर्ति, कलेक्टर श्री भव्य वर्मा, जिला विकास अधिकारी श्री विदेह खरे, सीजी सेमीकॉन के अधिकारी तथा गुजरात सेमीकंडक्टर उद्योग से जुड़े अधिकारी-कर्मचारी और युवा उपस्थित रहे।

परिचयन की प्रमुख विशेषताएं और आंकड़ों में विवरण :

साणंद का यह नया प्लांट सेमीकंडक्टर के वैश्विक बाजार में भारत की स्थिति मजबूत बनाने में कुंजीरूपी भूमिका निभाएगा। प्रोजेक्ट के प्रमुख विवरण निम्नानुसार हैं :

कुल निवेश : 7,600 करोड़ रुपए (केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा फरवरी 2024 में मंजूरी)

उत्पादन क्षमता : दोनों प्लांट मिलकर पूर्ण क्षमता पर पहुंचने के बाद प्रतिवर्ष 5 अब (5 बिलियन) तथा प्रतिदिन 1.5 करोड़ चिप्स का उत्पादन करेगे।

रणनीतिक भागीदारी : इस प्रोजेक्ट में सीजी पावर एंड इंडस्ट्रियल सॉल्यूशन्स लिमिटेड की स्विसडायरी सीजी सेमी, जापान की रेनेसास इलेक्ट्रॉनिक्स तथा हाईलैंड की स्टार माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स के बीच संयुक्त भागीदारी है।

रोजगार सृजन : प्लांट में हाल में 300 से अधिक कर्मचारी कार्यरत हैं, जबकि अगले 5 वर्ष में 5,000 प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रोजगार अवसरों का सृजन होगा।

चिप्स के प्रकार तथा उपयोग : प्लांट में क्यूएफएन तथा क्यूएफबी जैसी लीगेसी सुब्बैया ने स्वागत संयोजन में इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत सेमीकंडक्टर क्षेत्र में एक मजबूत वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है। साणंद

नागालैंड में दुकानें बिना दुकानदारों के चलती हैं, ग्राहक खुद खरीदारी करते हैं और ईमानदारी से भुगतान करते हैं

(छन्नलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। आज के उथल-पुथल भरे कलियुग में, जहाँ धोखाधड़ी और विश्वासघात के मामले दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं, भारत के एक राज्य में “राम राज्य” जैसी स्थिति देखने को मिल रही है। उत्तर-पूर्वी भारत के खूबसूरत राज्य नागालैंड में लोग इतने ईमानदार हैं कि वहाँ की स्थानीय दुकानों में किसी चौकीदार या दुकानदार की आवश्यकता ही नहीं है। ग्राहक स्वयं दुकान पर आते हैं, अपनी जरूरत का सामान खरीदते हैं और ईमानदारी से कैश बॉक्स में या ऑनलाइन स्कैनर के माध्यम से भुगतान करके चले जाते हैं। यह व्यवस्था नागालैंड के छोटे गांवों और कुछ शहरों में बहुत आम है। यहाँ दुकानें दिन भर खुली रहती हैं और उनके मालिक अपने अन्य कामों में व्यस्त रहते हैं। ग्राहक दुकान पर आकर मूल्य सूची या स्कैनर से सामान्य मूल्य की जांच करते हैं, फिर नकद राशि जमा करते हैं और यदि उन्हें छुड़ा वापस लेना हो तो वे स्वयं गिन लेते हैं। दुकानदार शम को आते हैं और केवल हिसाब-किताब करते हैं। हैरानी की बात है कि यहां चोरी का गमन के मामले न के बराबर या न के बराबर हैं। नागालैंड की इस अनूठी परंपरा के पीछे आदिवासी संस्कृति और मजबूत सामुदायिक मूल्य जिम्मेदार हैं।



यहां लोग एक-दूसरे को बहुत अच्छी तरह जानते हैं और समाज में नैतिकता का स्तर इतना ऊंचा है कि कोई भी व्यक्ति कुछ भी गलत करने से पहले सो बार सोचता है। दुकानदार ही नहीं,

टैक्सी चालक और होमस्टे मालिक भी टेक्सी से अतिरिक्त शुल्क नहीं लेते। इस प्रकार, नागालैंड की यह व्यवस्था पूरे देश के लोगों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करती है।

नमो गुजरात कौशल्य एवं रोजगार मिशन के तहत अहमदाबाद में ‘उद्योग एकेडेमिया-सेक्टर स्किल काउंसिल्स आउटरिच’ कार्यक्रम आयोजित

►► **विकसित भारत और विकसित गुजरात के लिए विश्व स्तरीय उद्योग-उन्मुख प्रशिक्षण अनिवार्य : श्री लोचन सेहरा, सचिव, श्रम, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग**

►► **कौशल विकास, इंटरनशिप और रोजगार के लिए डीएसडी, केएसयू, जीटीयू और गिफ्ट सिटी ने एनएसडीसी के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए**

गांधीनगर : गुजरात सरकार के श्रम, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग के अधीनस्थ कौशल विकास निदेशालय (डीएसडी) और रोजगार एवं प्रशिक्षण निदेशालय (डीईटी) ने गत गुरुवार, 2 जुलाई को अहमदाबाद के ले मेरिडियन होटल में नमो गुजरात कौशल एवं रोजगार मिशन (एनजीकेआरएम) के तहत ‘उद्योग-एकेडेमिया – सेक्टर स्किल काउंसिल्स आउटरिच कार्यक्रम’ आयोजित किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य उद्योगों, शैक्षणिक संस्थानों और सेक्टर स्किल काउंसिल्स के बीच मजबूत सहयोग स्थापित करना तथा नमो गुजरात कौशल एवं रोजगार मिशन, प्रधानमंत्री कौशल विकास और रोजगार योग्यता परिवर्तन (पीएम-सेतु) योजना,

प्रधानमंत्री इंटरनशिप योजना तथा मुख्यमंत्री अप्रेंटिसशिप योजना को लेकर जागरूकता पैदा करना था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद श्रम, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग के सचिव श्री लोचन सेहरा ने कहा कि विकसित भारत और विकसित गुजरात के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए कुशल मानवबल बहुत ही आवश्यक है। विश्व स्तरीय और उद्योग-उन्मुख प्रशिक्षण के जरिए ही वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी युवा तैयार किए जा सकते हैं। इसके अलावा, उन्होंने उद्योगों उद्योगों से सरकार के विभिन्न कौशल मिशनों में सक्रिय भागीदार बनने की अपील की। इस अवसर पर कौशल विकास, पाठ्यक्रम विकास, इंटरनशिप, प्रमाणपत्र



और रोजगार क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए डीएसडी, कौशल्य - द स्किल यूनिवर्सिटी (केएसयू), गुजरात टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी (जीटीयू) और गुजरात इंटरनेशनल फाइनैस टेक-सिटी (गिफ्ट सिटी) ने राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञों ने अलग-अलग प्रेजेंटेशन के जरिए राज्य और केंद्र सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं पर प्रकाश डाला। जिसमें

इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर स्किल्स काउंसिल ऑफ इंडिया (ईएसएससीआई), ऑटोमोटिव स्किल्स डेवलपमेंट काउंसिल (एएसडीसी) और लॉजिस्टिक्स सेक्टर स्किल काउंसिल (एलएससी) के प्रतिनिधियों ने विभिन्न क्षेत्रों में कौशल की मांग, रोजगार के अवसर, उद्योग-उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रमों और उद्योग-आकस्मिक सहयोग पर विस्तृत प्रेजेंटेशन दिए। इस अवसर पर एनएसडीसी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीओ) श्री अरुण पिल्लई, कौशल्य – द स्किल

यूनिवर्सिटी के महानिदेशक प्रो. एस.पी. सिंह, डीएसडी के निदेशक श्री के.जे. राठोड़, उप निदेशक श्री निपुण रावल, डेलॉइट के निदेशक श्री प्रियंक पटेल, भारतीय कॉर्पोरेट कानून सेवा (आईसीएलएस) से श्रीमती अंकिता लाहोटी और एनएसडीसी के प्रतिनिधि श्री राकेश कुमार सहित राज्यभर से 200 से अधिक उद्योगों, उद्योग संगठनों, यूनिवर्सिटीयों, शैक्षणिक संस्थानों, रोजगारदाताओं तथा सेक्टर स्किल काउंसिल्स के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

